Faizane Rajab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 183
Weekly Booklet : 183

फ़ैज़ाने रजब

सफ़हात 20

- दुआएं क़बूल होती हैं स. 3
- भलाई की चाबी स. 7
- अल्लाह पाक का महीना स. 9
- रजब के कूंडे स. 14

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने रजब**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने रजब

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला **''फ़ैज़ाने रजब''** पढ़ या सुन ले उसे माहे रजब की बरकतों से मालामाल कर दे और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक नेक शख़्स ने ख़्वाब में ''ख़ौफ़नाक बला'' देखी, घबरा कर पूछा : तू कौन है ? उस ख़ौफ़नाक बला ने जवाब दिया : ''मैं तेरे बुरे आ'माल हूं।'' पूछा : तुझ से नजात की क्या सूरत है ? जवाब मिला : ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ की कसरत।

(القول البدیع، ص۲۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मज़्लूम की बद दुआ़

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि एक बूढ़ा आदमी गुज़रा जो अन्धा और लंगड़ा था उस के आगे आगे एक और आदमी चल रहा था जो उस

को सख़्ती से घसीटता हुवा ले जा रहा था । ह़ज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने येह मन्ज़र देख कर इर्शाद फ़रमाया : मैं ने इतना बुरा मन्ज़र आज से पहले कभी नहीं देखा । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में ''इयाज़'' नामी एक शख़्स ने इस के मुतअ़ल्लिक़ पूरा क़िस्सा सुनाया कि ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! सबग़ा के दस बेटे थे और मैं उन का चचाज़ाद भाई था, मेरे भाइयों में से मेरे इ़लावा कोई बाक़ी नहीं रहा था । मैं अपने चचा सबग़ा के दस बेटों या'नी अपने चचाज़ाद भाइयों के पड़ोस में रहता था, वोह मुझ पर ज़ुल्मो सितम किया करते और मेरा माल नाह़क़ छीन लेते थे, मैं उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ दिलाता, रिश्तेदारी और हमसाएगी के वासिते़ देता कि मुझ से ज़ुल्म का हाथ रोक लो मगर येह वासिते़ देना भी मुझे उन के ज़ुल्म से न बचा सका, चुनान्चे

मैं ने उन्हें उन की ह़ालत पर छोड़ दिया, ह़त्ता कि जब ह़ुर्मत वाला महीना (रजब) आया तो मैं ने आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर उन के लिये बद दुआ़ की : ''ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं दिल की गहराई से येह दुआ़ करता हूं कि तू एक के इ़लावा सबग़ा के सारे बेटों को हलाक फ़रमा दे और उस एक को लंगड़ा और अन्धा कर दे और कोई ऐसा शख़्स हो जो उसे सख़्ती से खींचता फिरे ।'' उसी साल एक एक कर के उन में से नव बेटे मर गए और येह एक बाक़ी बचा जो अन्धा हो गया है और इस की टांगें भी नाकारा हो गईं, जैसा कि आप देख रहे हैं, ह़ज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : बेशक येह बहुत ही अ़जीब वाक़िआ़ है ।

(کتاب البر والصلۃ لابن جوزی، ص۱۶۷)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? ज़ुल्म का अन्जाम किस क़दर भयानक है । ह़ज़रते शैख़ मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

"**सहीह़ बुख़ारी**" में लिखते हैं : ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** पाक ज़ालिम को मोहलत देता है यहां तक कि जब उस को अपनी पकड़ में लेता है तो फिर उस को नहीं छोड़ता।" येह फ़रमा कर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पारह 12 **सूरए हूद** की आयत 102 तिलावत फ़रमाई :

وَ كَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَاۤ اَخَذَ الْقُرٰى وَ هِیَ ظَالِمَةٌؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِیْمٌ شَدِیْدٌ ﴿۱۰۲﴾

(پ۱۲، ھود:۱۰۲)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐसी ही पकड़ है तेरे रब की जब बस्तियों को पकड़ता है उन के ज़ुल्म पर। बेशक उस की पकड़ दर्दनाक कर्री (सख़्त) है।

हमेशा हाथ भलाई के वासिते़ उठें बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब
गुनाहगार त़लब गारे अ़फ़्वो रह़मत है अ़ज़ाब सहने का किस में है ह़ौसला या रब
कहीं का आह ! गुनाहों ने अब नहीं छोड़ा अ़ज़ाबे नार से अ़त्तार को बचा या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

दुआ़एं क़बूल होती हैं

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान किये गए वाक़िए़ से येह भी मा'लूम हुवा कि रजबुल मुरज्जब के महीने में दुआ़एं क़बूल होती हैं, **तारीख़ इब्ने अ़साकिर** की एक त़वील रिवायत में है : ज़मानए जाहिलिय्यत में भी लोग इस महीने की ता'ज़ीम किया करते, अपने ऊपर किये गए ज़ुल्म के ख़िलाफ़ कोई बद दुआ़ वग़ैरा न करते लेकिन जब रजबुल मुरज्जब का महीना आता तो ज़ालिम के ख़िलाफ़ दुआ़ करते तो उन की दुआ़ क़बूल हो जाती। (تاریخ ابن عساکر، ۴۵/۸۱)

ह़ज़रते इमाम ज़करिय्या क़ज़वीनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : कई अह़ादीसे मुबारका माहे रजब की अ़ज़मतो शान पर दलालत करती हैं कि इस में इ़बादतें और दुआ़एं क़बूल होती हैं। (عجائب المخلوقات، ص۲۹)

हाथ उठते ही बर आए हर मुद्दआ़ वोह दुआ़ओं में मौला असर चाहिये
अपने अ़त्तार पर हो करम बार बार इ़ज़्न, त़यबा का बारे दिगर चाहिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

चार महीने

रजबुल मुरज्जब बहुत बा बरकत महीना है। येह ह़ुर्मत (या'नी इ़ज़्ज़त) वाले उन चार महीनों में से एक है जिन की अ़ज़मतो शान क़ुरआनो ह़दीस में बयान की गई है। सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** पाक ने 12 महीनों में से चार महीनों को ख़ुसूसिय्यत अ़त़ा फ़रमाई और इन की ह़ुर्मत को अ़ज़मत बख़्शी और इन में गुनाह को बड़ा गुनाह क़रार दिया।"

(تفسیر ابن ابی حاتم، ۵/۴۶، رقم:۱۰۳۳۷)

पारह 10 **सूरतुत्तौबह** आयत 36 में इर्शाद होता है :

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ

(پ10، التوبة:36)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक महीनों की गिनती **अल्लाह** के नज़्दीक बारह महीने हैं **अल्लाह** की किताब में जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए उन में से चार ह़ुर्मत वाले हैं येह सीधा दीन है तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो।

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते क़तादा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुर्मत (या'नी इ़ज़्ज़त) वाले महीनों में नेक अ़मल का अज्र बढ़ जाता है और हुर्मत वाले महीनों में ज़ुल्म व गुनाह बाक़ी महीनों के मुक़ाबले में गुनाहे अ़ज़ीम हो जाता है अगर्चे ज़ुल्म व गुनाह हर ह़ाल में बड़ा है। (تفسیر بغوی، ۲/۲۴۴)

रजब को रजब क्यूं कहते हैं ?

ख़ादिमुन्नबी, जन्नती सह़ाबी, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ किया गया कि (माहे रजब) का नाम रजब क्यूं रखा गया ? इर्शाद फ़रमाया : क्यूं कि इस में शा'बान व रमज़ान के लिये ख़ैरे कसीर (या'नी बहुत ज़ियादा भलाई) बढ़ाई जाती है। (فضائل شهر رجب للخلال، ص۴۷)

रजब का एक और नाम

प्यारे इस्लामी भाइयो ! माहे रजबुल मुरज्जब का एक नाम ''शहरे असम'' या'नी बहरा महीना भी है, चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **फ़तावा रज़विय्या** में इस नाम की वज्ह कुछ यूं इर्शाद फ़रमाते हैं : हर महीना अपने हर क़िस्म वक़ाएअ़ (या'नी वाक़िआ़त) की गवाही देगा सिवाए रजब के कि ह़सनात (या'नी अच्छाइयां) बयान करेगा और सय्यिआत (या'नी बुराइयों) के ज़िक्र पर कहेगा मैं बहरा था मुझे ख़बर नहीं, इस लिये इसे ''शहरे असम'' कहते हैं। (फ़तावा रज़विय्या, 27/496)

इ़बादत में, रियाज़त में, तिलावत में लगा दे दिल रजब का वासित़ा देता हूं, फ़रमा दे करम मौला

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ज़बान की हिफ़ाज़त

आरिफ़ बिल्लाह शैख़ ज़ियाउद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दैरीनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बा'ज़ उ़लमाए किराम से नक़्ल फ़रमाते हैं : जब दौरे जाहिलिय्यत में लोग (रजब के महीने में) नेज़े छुपा लेते और जंग से रुक जाते थे तो मुसल्मान इस में अपनी ज़बानों की हिफ़ाज़त क्यूं नहीं करते और हतके हुर्मत (या'नी बे हुर्मती) से क्यूं नहीं रुकते। बेशक बा'ज़ मवाक़ेअ़ पर ज़बान नंगी तल्वार और नेज़ए नोकदार से ज़ियादा नुक़्सान देह होती है। (طهارة القلوب، ص۱۲۵)

यौमे कुफ़्ले मदीना

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हमें ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाना (या'नी ज़रूरत की ह़द तक बात करना) नसीब हो जाए तो बहुत सारी आफ़तों से नजात मिल सकती है, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक ''दा'वते इस्लामी'' के दीनी माह़ोल से वाबस्ता कई ख़ुश नसीब इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें ''ज़बान का कुफ़्ले मदीना'' लगाते हैं और ''यौमे कुफ़्ले मदीना'' भी मनाते हैं। वैसे तो हमें आख़िरी सांस तक ज़बान, आंख, कान और पेट की हिफ़ाज़त करनी है, ज़बान और कान को गुनाहों भरी और फ़ुज़ूल बात करने सुनने से, आंख को गुनाहों भरे मनाज़िर और परेशान नज़री (या'नी फ़ुज़ूल इधर उधर) देखने और पेट को ह़राम और फ़ुज़ूल खाने पीने से बचाना है, हर माह की पहली पीर शरीफ़ को इस अ़ह्द को नए सिरे से ताज़ा करने और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये इस की याद में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला ''ख़ामोश शहज़ादा'' पढ़ना है, याद रखिये ! कुफ़्ले मदीना का येह मत़लब हरगिज़ नहीं कि जाइज़ बात भी न की जाए जैसे किसी ने सलाम किया या छींक के बा'द ''اَلْحَمْدُلِلّٰه'' कहा या अज़ान की आवाज़ सुनाई दी तो इन का जवाब दिया जाएगा ह़त्ता कि जिन चीज़ों का जवाब देना वाजिब है तो उन का जवाब न देने की वज्ह से गुनाहगार होंगे। ज़बान के कुफ़्ले मदीना का मक़्सद अपनी ज़बान को फ़ुज़ूल बातों से रोकना है कि फ़ुज़ूल गोई से ख़ामोशी बेहतर है और नेकी की दा'वत वग़ैरा देना ख़ामोशी से बेहतर है। काश ! **बुख़ारी** शरीफ़ की येह ह़दीसे पाक हमारे ज़ेह्नो दिमाग़ में रासिख़ हो जाए, जिस में येह भी है : مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا اَوْ لِيَصْمُتْ ''जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि भलाई की बात करे या ख़ामोश रहे।''

(بخاری، ۴/۱۰۵ حدیث:۶۰۱۸)

रफ़्तार का गुफ़्तार का किरादर का दे दे हर उ़ज़्व का दे मुझ को ख़ुदा कुफ़्ले मदीना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

भलाई की चाबी

इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रजब को ''अल असब'' (या'नी तेज़ बहाव) भी कहते हैं इस लिये कि इस माहे मुबारक में तौबा करने वालों पर रह़मत का बहाव तेज़ हो जाता और इ़बादत करने वालों पर क़बूलिय्यत के अन्वार का फ़ैज़ान होता है। (مکاشفۃ القلوب،ص۳۰۱) ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल हादी ह़म्बली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''रजब का महीना ख़ैर व भलाई की चाबी है।'' (इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल, स. 127)

रजब की तमन्ना करने वाले बुज़ुर्ग

एक नेक आ़लिमे दीन माहे रजबुल मुरज्जब से पहले बीमार हो गए तो फ़रमाने लगे : मैं ने **अल्लाह** पाक से दुआ़ की है कि मेरी वफ़ात माहे रजबुल मुरज्जब तक मुअख़्ख़र फ़रमा दे, क्यूं कि मुझे येह ख़बर पहुंची है कि माहे रजब में **अल्लाह** पाक बन्दों को (दोज़ख़ से) आज़ाद फ़रमाता है। चुनान्चे **अल्लाह** पाक ने उन्हें रजबुल मुरज्जब का मुबारक महीना अ़ता फ़रमाया और इसी महीने में उन का इन्तिक़ाल हुवा।

(لطائف المعارف، ص138)

मौत ईमां पे दे मदीने में और महमूद आ़क़िबत फ़रमा
तू शरफ़ ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा मुझ को मरने का महमत फ़रमा
सरफ़राज़ और सुर्ख़ रू मौला मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नेक काम के दौरान मौत

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि उन का इन्तिक़ाल (Death) किसी अच्छे काम मसलन ह़ज, उ़मरह, ग़ज़्वा (जिहाद), रमज़ान के रोज़े वग़ैरा के दौरान हो। **(صفة الصفوة لابن جوزی، ۵۹/۲)**

दुआ़ए मुस्त़फ़ा

ख़ादिमुन्नबी, जन्नती सह़ाबी, ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : रजबुल मुरज्जब का महीना आता तो आक़ा करीम येह दुआ़

करते थे : اَللّٰھُمَّ بَارِكْ لَنَا فِیْ رَجَبٍ وَّ شَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا رَمَضَان **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** ! हमें रजब व शा'बान में बरकत अ़ता फ़रमा और हमें रमज़ान से मिला।

(موسوعۃ ابن ابی الدنیا، ۱/۳۶۱، حدیث: ۱)

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी रजब में हमारी इ़बादतों में बरकत दे और शा'बान में ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ दे, और रमज़ान का पाना इस में रोज़े और क़ियाम नसीब कर। सूफ़ियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم फ़रमाते कि रजब तुख़्म (या'नी बीज) बोने का महीना है, शा'बान पानी देने और रमज़ान काटने का कि रजब में नवाफ़िल में ख़ूब कोशिश करो, शा'बान में अपने गुनाहों पर रोओ और रमज़ान में रब्बे करीम को राज़ी कर के इस खेत को ख़ैरिय्यत से काटो। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/330 ब तक़दुम व तअख़्ख़ुर)

इ़बादत में, रियाज़त में, तिलावत में लगा दे दिल रजब का वासिता देता हूं फ़रमा दे करम मौला
बराअत दे अ़ज़ाबे क़ब्र से नारे जहन्नम से महे शा'बान के सदक़े में कर फ़ज़्लो करम मौला
मैं रह़मत, मग़्फ़िरत, दोज़ख़ से आज़ादी का साइल हूं महे रमज़ान के सदक़े में फ़रमा दे करम मौला

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह पाक का महीना

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : رَجَبٌ شَهْرُ اللّٰهِ وَشَعْبَانُ شَهْرِیْ وَرَمَضَانُ شَهْرُ اُمَّتِیْ या'नी रजब **अल्लाह** का महीना है, शा'बान मेरा महीना है और रमज़ान मेरे उम्मतियों का महीना है। (مسند الفردوس، ۲/۲۷۵، حدیث: ۳۲۷۶)

रजबुल मुरज्जब की पहली रात

अल्लाह पाक के रह़मत वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "पांच रातें ऐसी हैं जिस में दुआ़ रद नहीं की जाती : (1) रजब की पहली (या'नी चांद) रात (2) पन्दरह शा'बान की रात (या'नी शबे बराअत) (3) जुमुआ़ की रात (4) ईदुल फ़ित्र की (चांद) रात (5) ईदुल अज़्ह़ा की (या'नी ज़ुल ह़िज्जा की दसवीं) रात।" **(تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۴۰۸، حدیث:۲۶۰۴)**

जन्नत में दाख़िला

ह़ज़रते ख़ालिद बिन मि'दान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो रजब की पहली रात की तस्दीक़ करते हुए ब निय्यते सवाब इस को इबादत में गुज़ारे और उस के दिन में रोज़ा रखे तो **अल्लाह** पाक उसे दाख़िले जन्नत फ़रमाएगा। **(فَضائِلُ شَهرِ رَجَب لِلخَلّال، ص۱۰-غُنْيَةُ الطّالِبِين، ۱/۳۲۷)**

इस्तिग़्फ़ार की कसरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "रजब के महीने में इस्तिग़्फ़ार की कसरत करो, बेशक इस के हर हर लम्ह़े में **अल्लाह** करीम कई कई अफ़राद को आग से नजात अ़त़ा फ़रमाता है।" **(مسند الفردوس، ۱/۸۱، حدیث:۲۴۷)**

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने रजब व शा'बान में सात मरतबा येह कहा : اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيْمَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىَّ الْقَيُّوْمَ، وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ تَوْبَةَ عَبْدٍ ظَالِمٍ لِّنَفْسِهٖ، لَا يَمْلِكُ لِنَفْسِهٖ مَوْتًا وَّحَيَاةً وَّلَا نُشُوْرًا तो **अल्लाह** पाक उस पर मुक़र्रर दोनों फ़िरिश्तों (या'नी किरामन कातिबीन) को इर्शाद फ़रमाएगा इस के गुनाहों का सह़ीफ़ा (या'नी आ'माल नामा) मिटा दो।" **(الادب فی رجب، ص39)**

ह़ज़रते अशरफ़ जहांगीर समनानी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के मल्फ़ूज़ात में है : माहे रजब में बहुत इस्तिग़्फ़ार करे, जो शख़्स माहे रजब में तीन हज़ार बार इस त़रह़ इस्तिग़्फ़ार पढ़े वोह बख़्श दिया जाएगा : اَسْتَغْفِرُ اللهَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ مِنْ جَمِيْعِ الذُّنُوْبِ وَالْاٰثَام ।

(लत़ाइफ़े अशरफ़ी, 2/232)

ह़ज़रते वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : दुन्या की तमाम नहरें माहे रजबुल मुरज्जब में रजब की ता'ज़ीम के लिये ज़मज़म की ज़ियारत करती हैं और मैं ने **अल्लाह** पाक की किताबों में से किसी किताब में पढ़ा है कि जो शख़्स रजबुल मुरज्जब के महीने में सुब्ह़ व शाम हाथ उठा कर सत्तर मरतबा इस त़रह़ मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगे : ''اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَارْحَمْنِیْ وَتُبْ عَلَیَّ **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, मुझ पर रह़्म फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा।'' उस के जिस्म को कभी भी आग न छूएगी । (طہارۃ القلوب، ص۱۲۶)

या ख़ुदा मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा बाग़े फ़िरदौस मर्ह़मत फ़रमा
तू गुनाहों को कर मुआ़फ़ अल्लाह ! मेरी मक़्बूल मा'ज़िरत फ़रमा
हो न अ़त्त़ार ह़श्र में रुस्वा बे ह़िसाब इस की मग़्फ़िरत फ़रमा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़े

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुछ न कुछ नफ़्ल रोज़े रखने की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इन का बड़ा अज्रो सवाब है नीज़ माहे रमज़ानुल मुबारक से क़ब्ल ही कुछ न कुछ नफ़्ल रोज़े रखने की सआ़दत मिल

जाएगी, रमज़ानुल मुबारक में फ़र्ज़ रोज़े रखने और दिन में भूके प्यासे रहने की आ़दत बनेगी नीज़ रोज़े रखने के जिस्मानी त़ौर पर भी बे शुमार फ़वाइद हैं।

साल भर के रोज़े

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बेशक रजब बड़ा अ़ज़मत वाला महीना है कि इस में नेकियों का अज्र बढ़ा दिया जाता है जिस ने इस महीने के किसी एक दिन का रोज़ा रखा वोह ऐसा है जैसा साल भर के रोज़े रखे।'' (میزان الاعتدال، ۳/۴۹)

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से पूछा गया : क्या नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रजबुल मुरज्जब में रोज़ा रखते थे ? इर्शाद फ़रमाया : हां ! और इसे अहम्मिय्यत भी देते थे। (کنز العمال، جزء:2، 301/4، حدیث:24596)

जन्नती महल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रजब के रोज़ादारों के लिये जन्नत में एक महल है। (شعب الایمان، ۳/۳۶۸، حدیث:۳۸۰۲)

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे ह़ुर्मत (या'नी इ़ज़्ज़त) वाले महीनों में रोज़ा रखना ज़ियादा पसन्द है और रिवायत है कि जब रजब के अव्वलीन (या'नी पहले) जुमुआ़ की एक तिहाई (1/3 One Third) रात गुज़रती है तो कोई फ़िरिश्ता बाक़ी नहीं रहता मगर सब रजब के रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की दुआ़ करते हैं। (مکاشفۃ القلوب، ص621)

जहन्नम के दरवाज़े बन्द

आ़रिफ़ बिल्लाह शैख़ ज़ियाउद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दैरीनी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मरवी है कि जिस ने रजब के सात रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और जिस ने दस रोज़े रखे वोह **अल्लाह** पाक से जो मांगता है **अल्लाह** पाक उसे अ़ता फ़रमाता है और बेशक जन्नत में एक महल है जिस के सामने दुन्या एक परिन्दे के घोंसले की त़रह़ है, उस महल में सिर्फ़ रजब के रोज़े रखने वाले ही दाख़िल होंगे। (طهارة القلوب، ص۱۲۵)

रजब की पहली रात इन्तिक़ाल

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल ह़सन अ़ली बिन अह़मद यज़्दी बग़दादी शाफ़ेई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मा'मूल था कि आप रजब के रोज़े रखा करते थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه वसिय्यत करते थे कि मुझे इन्तिक़ाल के तीन दिन बा'द दफ़्न करना कहीं ऐसा न हो कि उस वक़्त मैं "सक्ते" में होउं, लेकिन एक मरतबा रजबुल मुरज्जब की आमद से कुछ दिन पहले फ़रमाया : मैं अपनी वसिय्यत से रुजूअ़ करता हूं, मुझे इन्तिक़ाल के फ़ौरन बा'द ही दफ़्न कर देना क्यूं कि मैं ने ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : يَاعَلِيُّ صُمْ رَجَباً عِنْدَنَا या'नी ऐ अ़ली ! रजब के रोज़े हमारे पास रखना। चुनान्चे रजब की पहली रात आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया। (سیر اعلام النبلاء، ۱۵/۱۱۶ ملتقطا)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

जब तेरी याद में दुन्या से गया है कोई जान लेने को दुल्हन बन के क़ज़ा आई है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मदीने का सफ़र

जन्नती सह़ाबी, मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم रजबुल मुरज्जब में उ़मरह करना पसन्द फ़रमाते थे । सह़ाबिय्या बिन्ते सह़ाबी, तमाम मुसल्मानों की अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا भी रजबुल मुरज्जब में उ़मरह अदा करते थे । मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हमारे बुज़ुर्ग (या'नी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) रजबुल मुरज्जब में उ़मरह किया करते थे । (لطائف المعارف، ص۱۳۷)

इ़ज़्न मिल जाए गर मदीने का काम बन जाएगा कमीने का
उस की क़िस्मत पे रश्क आता है जो मुसाफ़िर हुवा मदीने का
तुझ पे रह़मत हो ज़ाइ़रे त़यबा ! जा, निगह़बां ख़ुदा सफ़ीने का
हम को भी वोह बुलाएंगे इक दिन इ़ज़्न मिल जाएगा मदीने का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

रजब के कूंडे

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग, अहले बैते अत़्हार के रोशन चराग़, ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

के ईसाले सवाब के लिये खीर पूरियों और टिक्यों वग़ैरा पर फ़ातिहा ख़्वानी की जाती है जिन्हें ''**कूंडे**'' कहा जाता है यूं ही ''**तबारक की रोटी**'' पर भी फ़ातिहा ख़्वानी की जाती है। यक़ीनन इन सब की अस्ल ईसाले सवाब है जो कि सो फ़ीसद जाइज़ है जब कि किसी भी मुआ़मले में शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न हो। पूरे माहे रजब में बल्कि सारे साल में जब चाहें ईसाले सवाब के लिये कूंडों की नियाज़ कर सकते हैं, अलबत्ता मुनासिब येह है कि 15 रजबुल मुरज्जब को ''रजब के कूंडे'' किये जाएं क्यूं कि येही ''यौमे उ़र्स'' है जैसा कि **फ़तावा फ़क़ीहे मिल्लत** जिल्द 2 सफ़हा 265 पर है : ''ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की नियाज़ 15 रजब को करें कि ह़ज़रत का विसाल 15 ही को हुवा है।''

सिद्क़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिकुल इस्लाम कर

बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वासिते

शे'र की वज़ाह़त : या अल्लाह ! तुझे इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के ''**सिद्क़**'' (या'नी सच्चे होने) का वासिता मुझे ईमान की सलामती नसीब फ़रमा और इमाम मूसा काज़िम और इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِمَا के सदक़े मुझ से बिग़ैर ग़ज़ब फ़रमाए राज़ी हो जा।

(शर्ह़े शजरा शरीफ़, स. 57)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

मे'राजे मुस्त़फ़ा

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! माहे रजब में एक रात ऐसी है जो बे शुमार बरकतों, अ़ज़मतों और फ़ज़ीलतों वाली है, इसी रात हमारे प्यारे प्यारे

आक़ा, शबे अस्रा के दूल्हा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मे'राज का अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा अ़ता हुवा। ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बा'ज़ आ़रिफ़ीन (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान रखने वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ الله) का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को 34 मरतबा मे'राज हुई उन में से एक जिस्म (और रूह़) के साथ और बाक़ी रूह़ के साथ ख़्वाबों की सूरत में हुई।

(مواهب اللدنية، ۲/ ۳۴۱)

हैं सफ़ आरा सब हूरो मलक और ग़िल्मां ख़ुल्द सजाते हैं

इक धूम है अ़र्शे आ'ज़म पर मेहमान ख़ुदा के आते हैं

क़ुरबान मैं शानो अ़ज़मत पर सोए हैं चैन से बिस्तर पर

जिब्रीले अमीं ह़ाज़िर हो कर मे'राज का मुज़्दा सुनाते हैं

जिब्रीले अमीन बुराक़ लिये जन्नत से ज़मीं पर आ पहुंचे

बारात फ़िरिश्तों की आई मे'राज को दूल्हा जाते हैं

मे'राज शरीफ़ का इन्कार करना कैसा ?

सुवाल : मे'राज शरीफ़ का इन्कार करने वाले के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : सफ़रे मे'राज के तीन ह़िस्से हैं : (1) अस्रा (2) मे'राज (3) ए'राज या उ़रूज। ह़िस्सए अव्वल अस्रा क़ुरआने पाक की नस्से क़त़ई से साबित है। चुनान्चे पारह 15 **सूरतुल अस्रा** (इस को **सूरए बनी इसराईल** भी कहते हैं) की इब्तिदाई आयत में इर्शाद होता है :

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ①

(پ۱۵، بنی اسرائیل: ۱)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है उसे जो रातों रात अपने बन्दे को ले गया मस्जिदे ह़राम (ख़ानए का'बा) से मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के गिर्दा गिर्द हम ने बरकत रखी कि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियां दिखाएं, बेशक वोह सुनता देखता है।

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सत्ताईसवीं रजब को मे'राज हुई। मक्कए मुकर्रमा से हुज़ूरे पुरनूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का बैतुल मुक़द्दस तक शब के छोटे ह़िस्से में तशरीफ़ ले जाना नस्से क़ुरआनी से साबित है। इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) काफ़िर है और आस्मानों की सैर और मनाज़िले क़ुर्ब में पहुंचना अह़ादीसे सह़ीह़ा मो'तमदा मश्हूरा से साबित है जो ह़द्दे तवातुर के क़रीब पहुंच गई हैं इस का मुन्किर (इन्कार करने वाला) गुमराह है। मे'राज शरीफ़ ब ह़ालते बेदारी जिस्म व रूह़ दोनों के साथ वाक़ेअ़ हुई, येही जुम्हूर अहले इस्लाम का अ़क़ीदा है और अस्ह़ाबे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कसीर जमाअ़तें और हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अजिल्लए अस्ह़ाब इसी के मो'तक़िद हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 525) उ़रूज या ए'राज या'नी सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर की आंखों से दीदारे इलाही करने और फ़ौक़ुल अ़र्श (अ़र्श से ऊपर) जाने का मुन्किर (इन्कार करने वाला) ख़ाती या'नी ख़ताकार है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 227)

ख़िरद से कह दो कि सर झुका ले गुमां से गुज़रे गुज़रने वाले

पड़े हैं यां ख़ुद जिहत को लाले किसे बताए किधर गए थे

शर्हे कलामे रज़ा : सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने मश्हूर ''क़सीदए मे'राजिया'' के इस शे'र में फ़रमाते हैं : ऐ मे'राजे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सफ़र को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलने वाले ! अपनी अ़क़्ल को कह ! कि वोह इस ''अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़े'' के सामने अपने सर को झुका ले क्यूं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मे'राज की रात अपने ख़ालिक़ो मालिक के पास ''ला मकां'' तशरीफ़ ले गए जो कि हमारे गुमान में आ ही नहीं सकता क्यूं कि वोह ऐसा ''मक़ाम'' है जहां आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं, सब जिहतें (या'नी सम्तें) ख़त्म हो गई हैं बल्कि सम्तें ख़ुद ह़ैरानो परेशान हैं कि हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ''कहां'' तशरीफ़ ले गए हैं। (जैसा कि अगले शे'र में लिखते हैं :)

सुराग़े ऐनो मता कहां था निशाने कैफ़ो इला कहां था

न कोई राही न कोई साथी न संगे मन्ज़िल न मर्ह़ले थे

रजब के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

1. रजब में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (या'नी इबादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे और वोह सत्ताईस रजब है। (شعب الایمان، ۳/۳۷۴، حدیث: ۳۸۱۱)

2. जो रजब के सत्ताईसवें दिन का रोज़ा रखेगा तो **अल्लाह** पाक उस के लिये साठ महीनों के रोज़ों का सवाब लिखेगा। (فضائل شہرِ رجب للخلّال،ص ۷۶)

3. रजब में एक रात है कि उस में नेक अ़मल करने वाले के लिये 100 साल की नेकियों का सवाब लिखा जाता है और वोह रजब की सत्ताईसवीं शब है। जो इस में 12 रक्अ़त इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और कोई सी एक सूरत और हर दो रक्अ़त पर अत्तह़िय्यात पढ़े और 12 पूरी होने पर सलाम फेरे, इस के बा'द 100 बार سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر، पढ़े, 100 बार इस्तिग़फ़ार, 100 बार दुरूद शरीफ़ पढ़े और अपनी दुन्या व आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ जिस चीज़ की चाहे दुआ़ मांगे और सुब्ह़ को रोज़ा रखे तो **अल्लाह** पाक उस की सब दुआ़एं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ़ के जो गुनाह के लिये हो। (شعب الایمان،۳/۳۷۴،حدیث:۳۸۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

रजब में
येह दुआ पढ़ना सुन्नत है

रजबुल मुरज्जब का महीना आता तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صلى الله عليه واله وسلم येह दुआ करते थे :

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبٍ وَّشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا رَمَضَانَ۔

या 'नी ऐ अल्लाह ! तू हमारे लिये रजब और शा 'बान में बरकत अ़ता फ़रमा और हमें रमज़ान तक पहुंचा ।

(معجم اوسط، 85/3، حدیث:3939)

978-969-722-151-6
01082170

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net